स्नातक (प्रतिष्ठा)
तृतीय खण्ड
पत्र - सप्तम (VII)

प्रथम व्याख्यान

डा० राज कुमार राय
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग,
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय,
राजनगर (मधुबनी)

काव्य हेतु

भारतीय विद्वान लोकनि कविकेँ अत्यन्त उच्च आसनपर प्रतिष्ठित कयने छथि। हिनक विलक्षण व्यक्तित्वक कतोक प्रकारेँ प्रशंसा कयल गेल अछि। एहि सम्बन्धमे एतेक धरि कहल गेल अछि जे कवि वस्तुतः ब्रह्मा छथि, काव्यरूपी संसारक विधाता स्रष्टिकर्ता छथि। हिनके भावनाक अनुसार एहि विश्वक नियम परिवर्तित होइत अछि। ई विश्वकेँ अपन इच्छेँ जाहि रूपक रूपमे चित्रित क' दैत छथि, विश्व ओही रूपमे परिणत भ' जाइत अछि-

अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते॥

एतँ प्रश्न उपस्थित होइछ जे कविओ तँ एकटा सामान्य मानव होइत छथि तखन हुनकामे आखिर कोन शक्ति रहैत छनि जकर कारणे काव्य रचना अलौकिक कार्य करबाक श्रेय हिनका प्राप्त

Scanned with CamScanner

भऽ जाइत छनि। एहि प्रश्नक उत्तर काव्य हेतुसँ सम्बन्ध रखैत अछि आओर एहि सम्बन्धमे आचार्यलोकनि अपन-अपन मत अपन ग्रंथमे प्रस्तुत कयने छथि -

1. भामह :- काव्य-हेतुक प्रसंग विचार कयनिहार प्रथम आचार्य छथि भामह। हिनक अनुसार गुरुक उपदेशसँ जड़ बुद्धि सेहो शास्त्रक अध्ययन क सकैत अछि। किन्तु काव्य कोनो प्रतिभाशाली व्यक्तिएकें कहियो-कहियो स्फुरित होइत अछि -

गुरुपदेशादध्येतु शास्त्रं जडधियोऽप्यलम्।
काव्यं तु जायते जातु कथञ्चित प्रतिभावतः॥

2. दण्डी :- भामहक पश्चात् काव्यक-हेतुक प्रसंग आचार्य दण्डीक मत उपलब्ध होइत अछि। हिनक अनुसार ~~उत्कृ~~ उत्कृष्ट काव्यक निर्माणमे प्रतिभा, अध्ययन एवं अभ्यास तीनू अपेक्षित अछि किन्तु सामान्य रूपक काव्य प्रतिभाक अभाव रहितहुँ अध्ययन तथा अभ्यास द्वारा लिखल जा सकैत अछि -

Scanned with CamScanner

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहुनिर्मलम् ।
अमन्दश्चाभियोगोऽस्याः कारणं काव्य सम्पदः ।।

3. वामन – आचार्य वामन काव्य-हेतुक हेतु 'काव्यांग' शब्दक प्रयोग कयने छथि। हिनक अनुसार लोक, विद्या एवं प्रकीर्ण इएह तीन काव्य निर्माणक क्षमता प्राप्त करबाक अंग अछि –

लोको विद्याप्रकीर्णञ्च काव्याङ्गानि ।

4. रुद्रट :- प्रतिभा दुइ प्रकारक होइत अछि – सहजा एवं उत्पाद्या। सहजा प्रतिभा जन्मजात होइत अछि आओर इएह काव्यक मूल अछि। उत्पाद्या अध्ययन जन्य होइत अछि। ई व्युत्पत्तिक द्वारा उत्पन्न होइछ। एकरा द्वारा सहजा प्रतिभाक संस्कार होइत अछि –

तस्यासारनिरसनात् सारग्रहणाच्च चारुणः करणे ।
त्रितयमिह व्याप्रियते शक्तिर्व्युत्पत्तिरभ्यासः ।।
प्रतिभेत्यपरैरुदिता सहजोत्पाद्या च सा द्विधा भवति ।
पुंसां सहजातत्वादनयोस्तु ज्यायसी सहजा ।।

5. राजशेखर – आचार्य राजशेखर काव्य-हेतु प्रसंग विस्तारपूर्वक विचार करैत एहि निष्कर्षपर पहुँचल छथि जे 'प्रतिभा' एवं व्युत्पत्ति

- इएह दूर प्रमुख काव्य-हेतु अछि। प्रतिभा एवं व्युत्पत्तिसँ युक्त रहनाहि दोनो कवि वस्तुतः कवि ~~कह~~ कहयबाक अधिकारी छथि -

प्रतिभाव्युत्पत्तिमांश्च कविः कविरित्युच्यते।

ई एहि आधारपर दुइ प्रकारक कवि मानबाक पक्षमे छथि - काव्य कवि एवं शास्त्र कवि। पुनः ओ आगू कहैत छथि जे वस्तुतः शक्ति मात्र काव्य-हेतु अछि -

सा शक्तिः केवलं काव्य कविरित्युच्यते।

6. **जगन्नाथ** :- पण्डितराज जगन्नाथ काव्यहेतुक प्रसंग विचार करैत एहि प्रसंग प्रतिभा कें सर्वाधिक महत्व प्रदान कयने छथि -

प्रतिभैव केवला कारणम्।

तथा एहि प्रतिभाक विश्लेषण करैत ई कहने छथि जे काव्य रचनाक अनुकुल शब्दार्थक उपस्थिति मात्र करबाओनिहार क्षमता ही प्रतिभा अछि -

सा च काव्यघटनानुकूलशब्दार्थोपस्थितिः

स्रोत :- मैथिली काव्यशास्त्र - डा० दिनेश कुमार झा